Chap-6

षष्ठ अध्याय

गुजरात के हिन्दी साहित्य के विकास-क्रम में साहित्य संस्थाओं का अवदान

गुजरात में हिन्दी साहित्य के विकासक्रम में साहित्य संस्थाओं का योगदान

गुजरात ने हिन्दी को कभी भी पराई या दूसरी भाषा नहीं माना। अठारहवीं शताब्दी के मध्यकाल से ही गुजरात के प्रबुद्ध साहित्यकारों, अध्येताओं एवं विचारकों ने हिन्दी सृजन की भूमिका को पुष्ट कर दिया था। हेमचन्द्राचार्य जैसे ख्यातनामा वैयाकरण, दयानन्द सरस्वती जैसे वेदान्ती तथा नरसिंह मेहता एवं दयाराम जैसे प्रातिभ कवियों ने हिन्दी को सम्मानजनक स्थिति में प्रतिष्ठित कर दिया था। कच्छ भुज की ब्रजभाषा काव्य पाठशाला की महत्वपूर्ण भूमिका तो इतिहास प्रसिद्ध है ही।

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय में ही महात्मा गाँधी की दूरदर्शिता ने भाँप लिया कि राष्ट्र को एक सर्वमान्य भाषा की जरूरत है और उन्होंने कहा भी कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। उन दिनों हिन्दी का प्रचार एक तरह से राजकर्ताओं–ब्रिटिश शासकों और

देशी रियासतों के शासकों को पसंद नहीं था, बल्कि वे इसे स्वराज्य प्राप्ति का एक साधन मानते थे। प्रचारकों के लिए 'हिन्दी का प्रचार करना न केवल भाषा का प्रचार करना था। बल्कि वह राष्ट्रीयता और भारतीयता का प्रतीक बन गया था। हिन्दी प्रचार की लगन, ध्येय और कर्मठता की परीक्षा के ये दिन थे। हिन्दी कार्यकर्ताओं के पीछे पुलिस लगी रहती थी। हिन्दी के प्रचारक जोखिम उठाकर भी राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य करते थे। रात को वे खुद पढ़ते थे, सीखते थे और दिन में छात्रों को शिक्षकों और तथा अन्य लोगों को सिखाते थे।

'इन्दौर सम्मेलन के अधिवेशन में पू. गांधीजी ने यह उद्घोषित किया कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसका प्रचार-प्रसार करना हमारा कर्तव्य है।' अतः १९३६ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना कर गांधीजी ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा का व्याप विस्तरित करने का आयोजन किया। तब से यह समिति अहिन्दीभाषी प्रान्तों में राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य लगातार कर रही है। १४ सितम्बर को संविधान के अनुसार राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी अधिष्ठित हुई तत्पश्चात् देश के कोने-कोने में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए विविध संस्थाएँ स्थापित हुईं। इन संस्थाओं ने परीक्षा, पुस्तकालय, विद्यालय, पुस्तक-प्रकाशन, समारोह, पत्र-पत्रिका आदि के द्वारा राष्ट्रभाषा को फैलाने का कार्य किया। इन संस्थाओं में से कुछ हिन्दी भाषी प्रदेशों में कार्य करती रही हैं तथा अन्य कुछ ने अहिन्दीभाषी प्रदेशों में कार्य किया है। इनमें से कुछ प्रमुख हैं -

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, दक्षिण भारत प्रचार-सभा, मद्रास, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा आदि।

अनेकविध संस्थाओं ने राष्ट्रीय चरित्र निर्माण–हेतु को लक्ष्य में रखकर, राष्ट्रभाषा हिन्दी का सुचारु रूपेण विकास किया। उक्त–अनुक्त विभिन्न समितियों ने अपने विशाल परिवार द्वारा सम्पूर्ण भारत के कोने–कोने में तथा विदेशों में हिन्दी का प्रचार कार्य किया है।

पिछले लगभग सात दशकों से इन संस्थाओं ने नेत्र दीपक का कार्य किया है। इनके कार्यों और आपसी संबंधों में सहयोग, समन्वय और एकसूत्रता लाकर देश में हिन्दी प्रचार के लिए राष्ट्रीयमंच स्थापित करने के लिए सरकारी–गैरसरकारी स्तर पर हो रहे प्रयत्नों को सफलता प्राप्त हुई। अंततः सितम्बर, १९९४ में श्री गंगाशरण सिंह का स्वप्न साकार हुआ। सरकार ने 'अखिल भारतीय संस्था संघ' बनाया। जिसके अंतर्गत दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम भारत की अनेक हिन्दी प्रचार संस्थाएँ प्रेम पूर्वक हिन्दी का उज्जवल भविष्य बनाने के उद्देश्य से एकजुट हो गई हैं। स्थापना से लेकर आजतक इस संस्था संघ की सारी व्यवस्था लोकतांत्रिक ढंग से चल रही है।

सौराष्ट्र में राष्ट्रभाषा–प्रचार :

सौराष्ट्र में राजकोट के गाँधीवादी कार्यकर स्व.श्री जेठालाल जोषी तथा श्री जयंतीलाल मालधारी ने राष्ट्रभाषा प्रचार की प्रवृत्ति के बीज बोये। अतः गाँधीजी की प्रेरणा से हिन्दी का काम बढ़ाने के लिए आचार्य काका कालेलकर सारे देश का भ्रमण करने निकले। भावनगर में प्रमुख गांधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता स्व. श्री वजुभाई शाह ने कालेलकरजी की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा प्रचार का विधिवत् प्रारंभ किया। उन्होंने – 'काठियावाड राष्ट्रभाषा प्रचार' संगठन की स्थापना कर भावनगर शहर से राष्ट्रभाषा प्रचार का श्री गणेश किया। उनके साथ स्व. श्री कानजीभाई चौहाण, स्व. श्री रजबअली लाखाणी आदि कई साथ इस राष्ट्रीय कार्य में एकजुट हो गए।

प्रथम सोपान : 'काठियावाड राष्ट्रभाषा प्रचार' संस्था

१९३९ में भावनगर में वर्धा की परीक्षाओं के द्वारा हिन्दी-प्रचार का कार्य प्रारभ किया गया। १९३९ के मई मास में सरदार वल्लभभाई पटेल ने भावनगर में राष्ट्रभाषा के प्रथम वर्ग का विधिवत् उद्घाटन किया। तबसे राष्ट्रभाषा प्रचार की गंगा अविरल रूप से इस प्रदेश में बहती रही है। वर्धा समिति की हिन्दी परीक्षाओं के केन्द्र खोलना, वर्ग चलाना, छुट्टियों में शिक्षकों को तैयार करना आदि काठियावाड राष्ट्रभाषा प्रचार का मुख्य कार्य रहा है।

दूसरा सोपान : हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के साथ

इस काल के दौरान कई उतार-चढ़ाव भी आये। वर्धा समिति के साथ गांधीजी का मतभेद हुआ। उन्होंने अलग से 'हिन्दुस्तानी प्रचार समिति' की स्थापना की अतः काठियावाड प्रचार समिति ने भी वर्धा के स्थान पर गांधीनीति के अनुसार 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' से जुड़कर नागरीलिपि तथा उर्दू लिपि दोनों को स्वीकार कर तद्नुसार हिन्दुस्तानी प्रचार का कार्य किया।

तीसरा सोपान : गुजरात विद्यापीठ से सम्बद्धता

प्रत्येक प्रांत का राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य स्थानीय प्रान्तीय संस्था द्वारा किया जाए ऐसी प्रचार नीति के कारण हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने गुजरात में हिन्दी-प्रचार का कार्य गुजरात विद्यापीठ को सौंपा। अतः काठियावाड राष्ट्रभाषा प्रचार संस्था विद्यापीठ से संबद्ध होकर हिन्दी प्रचार के कार्य में जुट गई। १९४८ में सौराष्ट्र राज्य की स्थापना होने पर 'सौराष्ट्र रचनात्मक समिति' गठित हुई और गुजरात विद्यापीठ के श्री गिरिराज किशोर जी के मार्गदर्शन में समिति द्वारा हिन्दी तीसरी तक की परीक्षाओं का संचालन किया गया।

१९५२ से संस्था कार्यालय राजकोट चला गया और प्रचार की बागडोर श्री नरेन्द्रभाई अजारिया ने संभाली। गुजरात में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग अधिक हो इस दृष्टि से सरकारी कर्मचारी हिन्दी सीखे–ऐसी व्यवस्था की गई। शाला–शिक्षण मे प्राथमिक–माध्यमिक शालाओं में हिन्दी भाषा का शिक्षण अनिवार्य होने पर 'सौराष्ट्र प्रचार समिति' के कार्य को गति मिली। १९८६ से यह संस्था (रजिस्ट्री नंबर–एफ–९–६–८४–डी–१८ दिनांक–१२ दिसम्बर, १९८६) पंजीकृत होकर श्री नरेन्द्र अंजारिया के मार्गदर्शन में कार्यरत हुई। समिति द्वारा बातचीत, बालपोथी, पहली, दूसरी, तीसरी हिन्दी आदि पाँच परीक्षाएँ चलती हैं।

'समिति का अपना पुस्तकालय है। प्रचारक तालीमवर्ग संमेलन, वक्तृत्व एवम् निबन्ध स्पर्धाओं के माध्यम से हिन्दी प्रचार का काम समिति द्वारा हो रहा है।

समिति का कार्यक्षेत्र अमरेली, कच्छ, जामनगर, जूनागढ़, भावनगर, राजकोट और सुरेन्द्रनगर जिलों तक विस्तरित है।'

भावनगर में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार :

गांधीजी हिन्दी के एक अद्‌भुत प्रचारक थे। उन्होंने आजादी की लड़ाई लडते–लड़ते गुलामी की प्रतीक ऐसी विदेशीभाषा से लोहा लेने के लिए राष्ट्रभाषा की लड़ाई एक साथ लड़ने की आवश्यकता का अनुभव किया। उनका मुख्य उद्देश्य हिन्दी प्रचार द्वारा भारत की एकता को मजबूत करना, प्रान्तीय भाषाओं के सहयोग से हिन्दी भाषा का विकास करना और राष्ट्रभाषा के माध्यम से जनता को और समग्र राष्ट्र को संगठित करना था। जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिए एवम् अनेक भाषा–भाषी लोगों में समन्वय बढाने के विचार से उन्होंने राष्ट्र के प्रांत–प्रांत में हिन्दी प्रचार का संदेश दिया और हिन्दी

भाषी क्षेत्रों के उपरांत हिन्दीतर प्रान्तों में सुचारू रूप से हिन्दी के प्रचार की व्यवस्था की। भावनगर भी राष्ट्रीयता के इस जबरदस्त ज्वार से अछूता न रहा।

'भावनगर मे राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य संभवतः १९४७-४८ में प्रारंभ हुआ। पहले हिन्दी कार्यालय दीवानपरा रोड पर था। तत्पश्चात् हजुरपायगा रोड पर कार्यालय शुरू हुआ। जहाँ कर्मचारी बैठते थे, प्रचारक मिलते थे और पुस्तकालय भी चलता था।

भावनगर हिन्दी प्रचार के इस राष्ट्रीय-सेवा-यज्ञ में पीछे नहीं था। उन दिनों राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की प्राथमिक, प्रारंभिक, प्रवेश परीक्षाओं के वर्ग भिन्न-भिन्न स्कूलों में चलते थे। जहाँ स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाएँ शिक्षण कार्य करते थे।

परिचय, कोविंद, रत्न की कक्षाएँ हाईकोर्ट के सामने 'आयुर्वेद कॉलेज में चलती थीं। जहाँ श्री जयेन्द्रभाई, श्री हिंमतभाई याज्ञिक, श्री हिंमतभाई रैया, श्री गोविन्दभाई अजवालिया, श्री राधेकांत दवे आदि शिक्षक और प्रोफेसर अध्यापन कार्य करते थे।'

भावनगर में राष्ट्रभाषा प्रचार की मसाल को प्रज्वलित रखने का कार्य स्व श्री जयेन्द्रभाई त्रिवेदी ने किया। जीवन के अंतिम समय तक वे प्रचार कार्य से जुड़े रहे। वे 'गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' के सदस्य थे। समिति की पत्रिका 'राष्ट्रवीणा' के संपादक मंडल में वे दशकों तक कार्यरत रहे। हिन्दी प्रचार में उनकी सन्निष्ठ बहुविध सेवा के फलस्वरूप वे समिति के 'श्री जेठालाल जोषी हिन्दी सेवा पुरस्कार' से सम्मानित हुए थे।

उत्तम पुस्तकें ज्ञान-विज्ञान का अनमोल कोष है, यही कारण है कि एक सच्चा अध्ययवसायी अच्छे पुस्तकालय की कामना रखता है। मानव के व्यक्तित्व विकास की नींव पुस्तकें हैं यह सत्य उन्हें विदित था। अतएव पुस्तकालय प्रवृत्ति के प्रति भी उन्होंने पर्याप्त ध्यान दिया था। भावनगर कार्यालय में हिन्दी भाषा एवम् साहित्य के समुत्सुक

अध्येताओं के लिए 'जयेन्द्र त्रिवेदी' नाम से पुस्तकालय चलता था जिसमें उनका बहुत बडा आर्थिक योगदान था। उनके एवम् सहप्रचारकों के प्रयत्नों से प्रति वर्ष परीक्षाओं में हजार-बारह सौ विद्यार्थी उपस्थित रहते थे। पारस्परिक स्नेह व सौहार्दभाव बढाने के उद्देश्य से परीक्षा के बाद विद्यार्थी और प्रचारक भाई-बहनों का आस-पास के स्थानों मे प्रवास-पर्यटन भी होता था।

उनकी दृष्टि सबको साथ लेकर चलने की थी। अतः गुजरात प्रान्तीय समिति, अहमदाबाद के छोटे-बड़े हर कार्यक्रमों में श्री जयेन्द्रभाई के साथ सभी प्रचारक भी उपस्थित रहते थे। 'हीरक जयन्ती', 'श्री जेठालाल जोषी कांस्य प्रतिभा अनावरण' कार्यक्रम और अन्य कार्यक्रमों में सहप्रचारक भाग लेते थे। राष्ट्रभाषा के अखिल भारतीय संमेलनों में नागपुर, वर्धा, नासिक आदि स्थानों में भी प्रचारकों ने भाग लिया।

भावनगर में विविध रूप से एवम् विविध स्तर पर हिन्दी प्रचार की प्रवृत्तियॉ लोकप्रिय थीं। १४ सितम्बर 'हिन्दी दिवस' उत्साहपूर्वक मनाया जाता था। भदंत आनंद कौशल्यायन, दिनकरजी, जेठालाल जोषी आदि राष्ट्रभाषा के विद्वानों के प्रवचन से साहित्य प्रेमी नगरजन लाभान्वित होते थे। समय-समय पर विद्यार्थीयों में विविध विषयों पर वक्तृत्व-स्पर्धा का आयोजन होता रहता था। हिन्दी के उत्तम साहित्य से भावनगर के सुज्ञजनों को परिचित कराने के हेतु से रात्रि को 'शिशु विहार' के रंगमंच पर हिन्दी के प्रसिद्ध नाटकों का प्रयोग होता था। जिनमें प्रेमचंद के 'गोदान' ने प्रेक्षकों को प्रभावित किया, श्री हिम्मतलाल याज्ञिक का अभिनय प्रशंसनीय रहा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी सच्चे माने में देश की एकता की कड़ी बने उस दिशा में भारतवर्ष के शिक्षाक्षेत्र में एक बात महर्षि कर्वे के श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरशी विश्वविद्यालय की स्थापना से हुई। इस विश्वविद्यालय में हिन्दी को एक अनिवार्य विषय के रूप में

स्थान दिया गया। तब से लेकर आज तक शालाओं में, महाविद्यालयों में एवं विश्वविद्यालयों में हिन्दी प्रचार की यह ज्योत निरंतर प्रज्वलित रही है। इसे कई हिन्दी प्रेमियों ने अपने स्नेह से अविरत प्रदीप्त रखा है। भावनगर में हिन्दी के लोकप्रिय विद्वान प्राध्यापक श्री जयेन्द्रभाई का नाम भी इनमें अग्रस्थान पर आता है। उन्होंने अपने संकल्पों से, अपनी संपूर्ण लगन से अपने आपको राष्ट्र के रचनात्मक कार्य में समर्पित कर दिया था। वे आजीवन महिला शिक्षा के क्षेत्र से संलग्न रहे। वे महिलाओं की उन्नति के प्रबल समर्थक रहे और स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में नित-नूतन प्रयोगों के स्वागत कर्ता रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी के हिमायती श्री जयेन्द्रभाई ने भावनगर के शामलदास महाविद्यालय के प्राध्यापक के रूप में और तत्पश्चात् महिला महाविद्यालय के आचार्य के रूप में हिन्दी सेवी के रूप में एवम् साहित्यकार के रूप में भावनगर की अविस्मरणीय सेवा की है। उनके अध्ययन-अध्यापन और शोधयात्रा का उत्तमफल सभा को मिला। भावनगर में राष्ट्रभाषा के विकास का हर चरण उनका सदा ऋणी रहेगा। भावनगर में श्री जयेन्द्रभाई के निधन के पश्चात् एक अवकाश-सा छा गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का कार्य क्रमशः बंद हो गया। कार्यालय बंद हो गया। पुस्तकालय की पुस्तकें हाईस्कूल और कॉलेजों में बाँटी गई। भावनगर प्रचार केन्द्र व राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बरखास्त कर दी गई।

भावनगर में राष्ट्रभाषा प्रचार-कार्य का पुनः प्रारंभ :

राष्ट्रीय विचार-प्रवाह के जोश और ज्वार ने जब थोड़ा विराम लिया अर्थात् स्थैर्य प्राप्त किया तो क्रमशः देश की क्षेत्रीय भाषाओं में राजकार्य होने लगा। अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में, शाला-कॉलेजों में हिन्दी भाषा का मुख्य विषय के रूप में अध्ययन होने लगा तब इन परिवर्तित स्थितियों में राष्ट्रभाषा के राष्ट्रभाषा प्रचार-प्रसार के कार्य में थोड़ा अंतराल आ

गया। भावनगर में राष्ट्रभाषा कार्यालय की गतिविधियाँ समाप्त होने के बावजूद विविध रूप में हिन्दी भाषी की लोकप्रियता वृद्धिगत थी – यह निर्विवाद था।

चौदह वर्ष के सुदीर्घ विराम के पश्चात् भावनगर को पुनः राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की विविध परीक्षाओं के लिए केन्द्र की मान्यता प्रदान की गई। गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद के प्रान्तीय संचालक श्री अरविंदभाई जोषी के प्रयत्नों एवं सिफारिश से श्री विजयभाई इन्दुलाल भट्ट की नियुक्ति भावनगर केन्द्र व्यवस्थापक के रूप में की गई। सितम्बर–९२ में सर्वप्रथम इस केन्द्र से – प्राथमिक परीक्षा से लेकर रत्न तक की परीक्षाएँ संपन्न हुईं। जिसमें कुल छात्र संख्या ४२ थीं, इसमें रत्न की परीक्षाओं में मात्र दो छात्र थे – श्री रजनीकांत मुंजपरा तथा भावना शाह उत्तीर्ण हुए थे। भावनगर की प्रतिष्ठित शाला विशुद्धानंद स्कूल की ओर से परीक्षाएँ लेने के लिए सुविधाएँ देकर समुचित व्यवस्था की गई थी। इस समयावकाश में भावनगर को रत्न परीक्षा हेतु अस्थायी केन्द्र प्राप्त था। तत्पश्चात् क्रमशः इन परीक्षाओं एवं अन्यान्य प्रवृत्तियों द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार हेतु भावनगर और भावनगर जिले में प्रचार कार्य गतिमान हुआ।

राष्ट्रभाषा प्रचार–प्रसार का कार्यक्षेत्र भावनगर में विस्तरित होते–होते पूरे जिले में व्यापक रूप से फैल गया। अतः महुवा में भी केन्द्र की शुरूआत हुई, क्रमशः यह व्याप बढ़ता ही गया। १९९४ में अर्थात् दो वर्ष की अल्पावधि में भावनगर की अंग्रेजी माध्यम की मिशनरी शालाएँ, फातिमा कान्वेन्ट, के. पी. ए. एस. आदि शालाओं में हिन्दी परीक्षा की प्रवृत्ति शुरू की गई। वर्धा की इन परीक्षाओं का व्याप बढ़ा तो भावनगर की स्थानीय ८८ शालाओं की परीक्षाएँ लेने की शुरुआत की गई जिनमें हिन्दी प्रेमी छात्रों की संख्या ३५५८ तक पहुँच गई। भावनगर जिले में वल्लभीपुर, गारियाधार, तलाजा, महुवा, सिहोर

आदि तालुकाओं में कुल ११२ केन्द्र प्राथमिक, माध्यमिक एवम् उच्च माध्यमिक शालाओं में शुरू किये गये। इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप भावनगर में घरशाला संस्था के सहयोग एवम् सहकार से प्रत्येक रविवार को प्राथमिक से रत्न तक की परीक्षाओं के लिए सेवाभाव से निःशुल्क मार्गदर्शन वर्ग प्रारंभ किये गये। इस प्रवृत्ति में एस.एन.डी.टी. की श्रीमती गांधी महिला कॉलेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और इस आलेख की लेखिका का सहयोग प्राप्त हुआ। उनके मार्गदर्शन के अंतर्गत ये क्लासें ली जातीं रहीं। रत्न परीक्षा की परीक्षक के रूप में उन्होंने १९९६ से अपनी सेवाएँ फरवरी-सितम्बर सत्रों में दी थीं जो आज पर्यंत दे रही हैं।

छात्र-मार्गदर्शन सेवा के प्रारंभ के सुफल स्वरूप १९९८ में के.पी.ई.एस. की छात्रा रोझी रत्नानी ने प्राथमिक परीक्षा में समग्र भारत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर केन्द्र के प्रचारकों के परिश्रम को उज्जवल कर दिखाया था। इस समयावकाश में २००१ के वर्ष में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भावनगर द्वारा भावनगर जिले के प्रचारक एवम् शाला केन्द्र संचालकों के एक विशाल संमेलन का भावनगर में आयोजन किया गया था। इस संमेलन में भावनगर के आदरणीय एवं दीर्घकाल से सेवारत, वयस्क, अठहत्तर वर्षीय श्री बलवंतभाई भट्ट (शाल एवम् प्रतीक प्रदान कर) आदर सम्मानित किये गये थे। इस संमेलन में पिछले पाँच वर्ष से सेवारत महिला कॉलेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष व इस आलेख की लेखिका को भी सम्मानित किया गया था।

भावनगर में राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र का पुनः प्रारंभ होने पर शुरुआत में हिन्दी प्रेमी श्री अरुणभाई पटोलिया ने अपना कार्यालय आठ वर्ष तक (बिना किसी प्रकार का भाड़ा या बिजली खर्च आदि किए बिना) हिन्दी कार्यालय के लिए भावनगर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को सेवार्थ दिया था। परंतु आज यह कार्यालय तुलसी चेम्बर, तीनमाला,

पीरछल्ला रोड पर कार्यरत है। परीक्षार्थीओं की संख्या में क्रमशः वृद्धि होने से कामकाज में मुश्किलें आने पर २००० की साल में हिन्दी कार्यालय सेवा को कम्प्यूटराइज्ड किया गया। जिसमें बैंक ऑफ इन्डिया, नीलमबाग शाखा तथा इसके मैनेजर–प्रबंधक श्री दिलीपभाई उपाध्याय का सहकार प्राप्त हुआ। प्रत्येक शाला–केन्द्रों को कम्प्यूटर पद्धति से परिणाम व प्रमाणपत्र देना शुरू किया गया। फरवरी २००२ में ली गई प्राथमिक परीक्षा में भावनगर केन्द्र से फातिमा कॉन्वेन्ट की विद्यार्थीनी डॉली महेन्द्रभाई मोहनानी ने समग्र भारत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करके पुनः भावनगर केन्द्र को भारत के सर्व केन्द्रों में अग्रिम स्थान पर रख दिया। पिछले तीन साल से भावनगर केन्द्र तथा भावनगर जिले के केन्द्रों में जहाँ–जहाँ परीक्षा व्यवस्था होती है, वहाँ–वहाँ स्व. कुसुमबहन इन्दुलाल भट्ट की स्मृति में प्राथमिक से रत्न तक की परीक्षाओं की पुस्तकें निःशुल्क वितरित की जाती हैं।[१]

महात्मा गांधी ने हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में जो महत्वपूर्ण भूमिका निबाही थी, उसी से प्रेरणा लेकर काका कालेलकर, सर सयाजीराव गायकवाड, मोहनलाल भट्ट, जेठालाल जोशी, परमेष्ठीलाल जैन, अमृतलाल नानावटी, मगनभाई देसाई, मोरारजी भाई देसाई, कन्हैयालाल मुंशी, ठाकोरभाई देसाई, नरदेव वेदालंकार, वल्लभदास अक्कड़, विपिन बिहारी चटपट, ईश्वरभाई पटेल, अम्बाशंकर नागर, रामलाल परीख, विष्णु विराट, रामकुमार गुप्त, भगवतशरण अग्रवाल, किशोर काबरा प्रभूति विद्वानों एवं हिन्दी हितैषियों ने गुजरात में हिन्दी की अजस्र धारा को सतत अग्रसरित किया है।

भाषा एवं साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में गुजरात की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसका सर्वाधिक श्रेय महात्मा गांधी को भी दिया जा सकता है।

श्री कालीदास त्रिवेदी के मतानुसार – ''पूज्य महात्मा गांधी के प्रभाव के कारण स्वतंत्रता की लडाई के दरम्यान लड़ाई का मुख्य केन्द्र गुजरात रहा है। इसके अनेक सुन्दर परिणामों में से एक सुखद परिणाम यह आया कि गुजरात की प्रजा और नेतृत्व में एक सुदृढ़ राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित हुआ और राष्ट्रीय एकता के संस्कार गुजरात की प्रजा में अधिक से अधिक मजबूत होने लगे। गुजरात की राजभाषा नीति और हिन्दी भाषा के प्रति उसके दृष्टिकोण में इस विचारसरणी का प्रतिफलन देखा जा सकता है।

गुजरात राज्य की स्थापना होने के पश्चात् सबसे पहले गुजरात की विधानसभा में गुजरात की राजभाषा नीति के विषय में निर्णय लिया गया। इस निर्णय से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गुजराती प्रजा की भाषा के विषय में एक स्पष्ट नीति है और भाषा के मूल्य के विषय में वह जागृत है।

भाषा के व्यवहार की दृष्टि से अवलोकन कर तो यह साफ जाहिर हो जाता है कि गुजरात एक अहिन्दी भाषी राज्य है। परन्तु गुजरात में व्यवहार की भाषा के रूप में हिन्दी का सार्वभिक स्वीकार हुआ है। यह एक अत्यंत स्वगतार्ह घटना है। साहित्य–गर्जना और अन्य व्यवहार–क्षेत्रों के साथ–साथ राज्य के प्रशासन में भी हिन्दी को महत्व प्रदान किया गया है जो गुजरात राज्य के लिए एक गौरवपूर्ण प्रशासनिक कदम माना जायेगा।

सन् १९६० की तारीख पहली मई को गुजरात राज्य की स्थापना हुई। उसके पश्चात् गुजरात की विधानसभा ने सबसे पहले जो काम हाथ में लिया वह था – ''गुजरात राजभाषा अधिनियम''। इस अधिनियम के तहत देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को दूसरी राजभाषा के रूप में स्वीकारा गया। इस तरह गुजरात में हिन्दी को पूर्ण महत्व दिया गया है। इतना ही नहीं गुजरात ने भारतीय संविधान की कलम ३४५, ३४६ और ३४७ की भावना को साकार करते हुए देवनागरी लिपि वाली हिन्दी को राजभाषा के

रूप में प्रतिष्ठित कर अन्य अहिन्दी भाषी राज्यों के लिए एक उमदा उदाहरण पेश किया है।

गुजरात राज्य ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने के साथ-साथ हिन्दी के लिए की गई संवैधानिक व्यवस्था की पूर्ति के लिए अनेक उपयोगी और महत्व के कदम भी उठाये हैं। भारत के संविधान को धारा ३४६ को ध्यान में रखकर गुजरात सरकार ने कुछ राज्य विशेषों के साथ विचार-विनिमय करके उनके साथ हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने का निर्णय करने का निर्णय लिया। इनमें भारत सरकार, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश, बिहार तथा महाराष्ट्र का समावेश होता है।

राजभाषा अधिनियम के तहत केन्द्र सरकार और हिन्दी-भाषी राज्य सरकारों के साथ हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने की प्रशासनिक कार्यक्षमता और सरलता को ध्यान में रखकर हिन्दी में पत्र-व्यवहार करे की नीति के अनुसार यह प्रस्तावित किया गया कि भारत सरकार तथा हिन्दीभाषी राज्यों को पावती, पत्र, स्मृतिपत्र आदि हिन्दी में ही प्रेषित किए जाएँ राज्य हिन्दी समिति की मदद से हिन्दीभाषी राज्यों के साथ पत्र-व्यवहार हिन्दी में ही किया जाए और लोगों के द्वारा हिन्दी में लिखे गए पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाए।

इसके अतिरिक्त राज्य के अधिकारी और कर्मचारी हिन्दी में प्रशासनिक कार्यों को पूरी-पूरी सज्जता के साथ करने में सक्षम बनें; इस आशय से उनके लिए हिन्दी की परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य कर दिया गया। गुजरात सरकार की प्रशासनिक सेवाओं में प्रवेश पाने के इच्छुक तमाम व्यक्तियों के लिए राजभाषा अधिनियम के अनुसार हिन्दी का ज्ञान अपरिहार्य माना गया है। इस संदर्भ में सन् १९६१ से गुजरात राज्य भाषा निदेशक के कार्यालय के द्वारा सरकारी अधिकारी और कर्मचारीयों के लिए उच्च निम्न और

बोलचाल श्रेणी का परीक्षाओं का आयोजन किया गया है। इस तरह नियत की गई परीक्षा में प्रत्येक सरकारी कर्मचारी को प्रथम नियुक्ति से तीन वर्ष के भीतर उत्तीर्ण होना चाहिए। यदि कर्मचारी को बढ़ोत्तरी मिली हो तो उसे बढती की तारीख से दो वर्ष के भीतर निर्धारित परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य माना गया है।

गुजरात राज्य के भाषा-निदेशक का कार्यालय उपर्युक्त परीक्षा वर्ष में दो बार लेता है। अब तक इन परीक्षाओं में २५,००८ व्यक्ति उच्चश्रेणी की परीक्षाओं में तथा १३,९९२ व्यक्ति निम्न श्रेणी की परीक्षाओं में एवं ५५,४५३ व्यक्ति बोलचाल की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर हिन्दी में पत्रव्यवहार कर गुजरात सरकार के प्रस्ताव के अनुसार हिन्दी कार्यान्वयन में सहायता दे रहे हैं।

हिन्दी को राजभाषा के रूप के अपनाने के बाद भारत सरकार और अन्य हिन्दी भाषी राज्यों के साथ हिन्दी में पत्र व्यवहार की प्रक्रिया को कार्यान्वित करे के हेतु सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी में लिखने के लिए प्रेरित करने के लिए तथा हिन्दी की अद्यतन शब्दावली एवं पत्र-व्यवहार के विविध स्वरूपों से परिचित करने के लिए गुजरात राज्य के भाषा निदेशक के कार्यालय के द्वारा सन् १९८२ से हिन्दी के ओप-अभ्यासक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। उसमें सचिवालय के विभागों के सहायकों का तथा अनुभागों के अधिकारियों को हिन्दी भाषा की गहरी तालीम दी जाती है। ८० प्रतिशत से अधिक हाजरीवाले एवं ६० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करनेवाले अधिकारी एवं कर्मचारी को प्रोत्साहन के रूप में एक सौ रूपया इनाम में दिए जाते हैं तथा रुपया पचास के मूल्य की हिन्दी पुस्तकें तथा शब्दकोश भी इनाम के रूप में प्रदान किए जाते हैं।

गुजरात राज्य की राजभाषा के अधिकृत मुखपत्र के रूप में भाषा निदेशक के कार्यालय के द्वारा ''राजभाषा'' त्रैमासिक पत्र प्रकाशित किया जाता है और उसमें ''त्रिभाषी प्रशासनिक शब्दावली'' के रूप में प्रशासनिक हिन्दी के लेखन-प्रकार आदि विभागों के द्वारा हिन्दी के प्रसार को समुचित समर्थन दिया जा रहा है।

भाषा-निदेशक के कार्यालय ने अभी-अभी २५,००० अंग्रेजी शब्दों का गुजराती-हिन्दी बृहत् त्रिभाषी शब्दकोश तैयार किया है। इस प्रकाशन के पीछे यह आशय रहा है कि गुजरात के समस्त प्रशासनिक तंत्र क्षेत्र प्रत्येक स्तर पर स्थित कर्मचारी या अधिकारी को हिन्दी की अधिकृत परिभाषा और पर्यायों के उपयोग करने की क्षमता प्राप्त हो और आन्तर राज्य प्रशासनिक पत्र व्यवहार में एकता लाने में सरलता रहे। वास्तव में हिन्दी-प्रोत्साहन के कार्य में गुजरात का यह योगदान गौरवपूर्ण और विधाकीय रहा है।''[२]

यहाँ की हिन्दी प्रचारक संस्थाओं में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा, बड़ौदा, हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद, गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी, गांधीनगर, साहित्यालोक, अहमदाबाद आदि संस्थाओं का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है। इसमें भी गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद के अभिनव प्रदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता जो अद्यावधि पर्यंत अपनी आचार संहिता का साग्रह पालन कर रही है।

गुजरात विद्यापीठ के संदर्भ में श्री लल्लूभाई रबारी का मत है कि - ''गुजरात विद्यापीठ की स्थापना १८ अक्टूबर, १९२० के रोज महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय के रूप में की, तब से ही विद्यापीठ के ध्येयों में राष्ट्रभाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी का अभ्यास देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों में रखा गया, जो अब भी जारी है। यह विद्यापीठ के ध्येयों में निम्न शब्दों में बताया गया है।

'विद्यापीठ के अभ्यासक्रम में हिन्दी–हिन्दुस्तानी का लाजमी स्थान होगा।'

नोट : हिन्दी–हिन्दुस्तानी वह भाषा है, जो उत्तर भारत के हिन्दू और मुसलमान दोनों सामान्य रूप से बोलते हैं और जो देवनागरी और उर्दू लिपि में लिखी जाती है।

१९३५ के हिन्दी साहित्य संमेलन के इंदौर अधिवेशन में राष्ट्रभाषा हिन्दी की व्याख्या को अधिक व्यापक किया और उसमें उर्दू भाषा का समावेश किया गया। इसके बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना करके उसके द्वारा देश के दूसरे हिन्दीतर प्रान्तों में राष्ट्रभाषा प्रचार आन्दोलन शुरू किया। देश ने गाँधीजी के इस आंदोलन को अपना लिया और सब प्रान्तों में राष्ट्रभाषा हिन्दी की परीक्षाएँ बड़े जोरों से शुरू हो गईं। महात्मा गाँधीजी ने १९४२ में वर्धा में 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' की स्थापना की। १९३९ से हिन्दी प्रचार कार्य विद्यापीठ की सहायता से आचार्य काकासाहब कालेलकर ने 'गुजरात हिन्दी प्रचार' के नाम से गुजरात में शुरू किया था। बाद में १९४४ से दोनों लिपियों में यह काम प्रारंभ हुआ। १९४६ तक हिन्दुस्तानी की चार परीक्षाओं में हजारों परीक्षार्थी प्रेमपूर्वक बैठे। प्रचारकों ने अच्छा सहयोग दिया और दूर–दूर तक किसी भी पुरस्कार की अपेक्षा के बिना सिर्फ राष्ट्रप्रेम और इस रचनात्मक कार्य के प्रति पू. बापू के आशीर्वाद लेकर प्रचारकों ने यह कार्य किया था। एक सुंदर वातावरण गुजरातभर में फैल गया था।

सन् १९४६ में गुजरात विद्यापीठ ने इसके लिए 'गुजरात हिन्दुस्तानी प्रचार समिति' नाम की अपनी एक समिति बनाई और काकासाहब ने प्रचार का कार्य विद्यापीठ को सौंप दिया। समिति के अध्यक्ष थे, गुजरात विद्यापीठ के कुलनायक सरदार वल्लभभाई पटेल। सन् १९४९ तक हजारों परीक्षार्थी इसकी दोनों लिपियों वाली परीक्षाओं में शामिल हुए थे। समिति की किताबें भी इस तरह तैयार करवाई थीं कि ऊपर हिन्दी और नीचे उर्दू लिपि में। प्रश्नपत्र तथा प्रमाणपत्र भी इसी तरह से तैयार करके दिये जाते थे।

सितम्बर १९४९ को जब संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव रखा गया, तब तक करीब-करीब सारे देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो गया था। इसलिए वह प्रस्ताव बड़ी आसानी से पास हो गया। देश में गुजरात और महाराष्ट्र दो प्रांत ऐसे थे कि जहाँ राष्ट्रभाषा प्रचार का बहुत जोर था। पिछले पाँच वर्षों में गुजरात में हिन्दी प्रचार बहुत व्यापक हो गया, इससे गुजरात सरकार ने भी हिन्दी को अपना लिया और इसकी पढ़ाई पाँचवीं कक्षा से शुरू कर दी। अब तक स्कूलों में पाँचवीं कक्षा से हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप में सिखाई जा रही थी। इस साल से तो चौथी कक्षा से हिन्दी शुरू हो गई है।

सितम्बर १९४९ में भारत की संविधान सभा ने राष्ट्रभाषा संबंधी निर्णय कर लिया। इसके बाद विद्यापीठ की हिन्दी परीक्षाओं में उर्दू लिपि सिर्फ प्रचार परीक्षाओं के लिए ऐच्छिक कर दी गई। विद्यापीठ का अपना महाविद्यालय जो 'महादेवभाई देसाई समाज सेवा महाविद्यालय' के नाम से है, इसके पाठ्यक्रम में दोनों लिपियों की जानकारी अनिवार्य रखी, जो आज तक चालू है। यहाँ यह बताना जरूरी समझते हैं कि महात्मा जी की इस दो लिपियोंवाली बात अगर हमने मान ली होती तो आज के ज कौमीफसाद, टंटे और झगडे आये दिन होते रहते हैं, शायद नहीं होते। लोगों में जो अलगाव है यह भी नहीं रहता और सब मिलजुलकर एक - दूसरे के साहित्य को भलीभाँति जानते। १९५१ में 'हिन्दी सेवक' परीक्षा प्रारंभ की गई, जो बी.ए. के समकक्ष मानी गयीं।

१९५१ में बम्बई सरकार ने अपने कार्मचारियों के लिए विद्यापीठ की परीक्षा पास करना लाजमी बना दिया। फलस्वरूप संख्या बढ़ गई और काम अच्छी तरह से चलने लगा।

१९६२ से गुजरात हिन्दी प्रचार समिति ने 'हिन्दी सेवक' के आगे की परीक्षा 'हिन्दी पारंगत' शुरू की। बाद में 'हिन्दी अनुवाद' परीक्षा/हिन्दी के ज्ञान की नींव बचपन से ही डालने के लिए १९६५ से 'हिन्दी बालपोथी' परीक्षा शुरू की गई। इस तरह से हिन्दी बालपोथी से हिन्दी सेवक तक छः परीक्षाएँ हुईं। गुजरात में गुजरात के बाहर से आकर बसे लोगों के लिए, उनके बच्चों के लिए गुजराती भाषा की परीक्षाओं की व्यवस्था १९५५ से विद्यापीठ ने की है। गुजराती बालपोथी, गुजराती प्राथमिक, गुजराती सुबोध, गुजराती प्रबोध तथा गुजराती विनय नाम की पाँच परीक्षाएँ ली जाती हैं। गुजराती विनय परीक्षा को गुजरात सरकार ने एस.एस.सी. समकक्ष माना है। विद्यापीठ ने यह भी सोचा कि देश की दूसरी भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था भी शुरू की जाये क्योंकि भावात्मक एकता को बल मिले और देश की दूसरी भाषाओं के प्रति हम में औदार्य और मान पैदा हो। विद्यापीठ ने अपने 'भाषा संस्कृति केन्द्र' द्वारा देश की १२ भाषाएँ – गुजराती, मराठी, उर्दू, सिंधीं, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, पंजाबी, बंगला, संस्कृत तथा विदेशी दो भाषाएँ फ्रेंच तथा रशियन सिखाने की व्यवस्था की है। 'प्रो. रामलाल परीख भाषा संस्कृति संस्थान' द्वारा यह काम हो रहा है।

१९६२ में हिन्दी पारंगत (एम.ए. समकक्ष) का दो साल का पत्राचार अभ्यासक्रम शुरू किया गया जो १९६५ में बंद हो गया क्योंकि विद्यापीठ में महाविद्यालय में हिन्दी पारंगत (एम.ए.) की पढ़ाई व्यवस्थित रूप से शुरू हुई।

विद्यापीठ ने इसी वर्ष एक दूसरा कदम उठाया। भारत सरकारी की योजना के मुताबिक विद्यापीठ को हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय दिया गया। प्राथमिक शालाओं के लिए हिन्दी शिक्षा विनीत और हाईस्कूलों के लिए हिन्दी शिक्षा विशारद इस प्रकार दो वर्ग चलते

थे। इसी तरह से विद्यापीठ के गुजरात प्रदेश में हिन्दी भाषा के तालीम पाये हुए अध्यापकों की व्यवस्था स्वैच्छिक ढंग से की है। बाद में हिन्दी शिक्षा विनीत वर्ग बंद हो गया था।

१९७५ में विद्यापीठ ने एक नया कदम उठाया। गुजरात विद्यापीठ की छट्ठी परीक्षा हिन्दी सेवक पास करनेवाला अगर घर पर अभ्यास करना चाहता है तो उसके विद्यापीठ ने ११ प्रश्नपत्र जोड़कर समाजविद्या विशारद (हिन्दी साहित्य-स्वाध्याय) नाम से एक अलग परीक्षा बनाई जिसमें तीन गुजराती, तीन हिन्दी, दो संस्कृत, एक समूह जीवन, एक मौखिक परीक्षा और एक स्वाध्याय वायवा के साथ। इस तरह से विद्यापीठ के प्रचारक अपनी योग्यता बढ़ा सकते हैं। जो आगे अभ्यास करना चाहते हैं वे यह परीक्षा पास करके पारंगत (एम.ए.) तथा बी.एड. (हिन्दी शिक्षा विशारद) में प्रवेश पा सकते हैं। अन्य युनिवर्सिटीयों में भी इनको प्रवेश मिलता है।

विद्यापीठ की हिन्दी तीसरी, हिन्दी विनीत और हिन्दी सेवक परीक्षा को क्रमानुसार एस.एस.सी, इण्टर मीडिएट तथा बी.ए. की समकक्षता भारत सरकार की तरफ से प्राप्त है। यह समकक्षता सिर्फ हिन्दी विषय के लिए है।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली की स्थापना में विद्यापीठ ने विशेष सहयोग दिया था। विद्यापीठ के कुलनायक स्व. श्री रामलालभाई परीख ने कई सालों तक संघ के सचिव तथा अध्यक्ष स्थान पर काम किया और हिन्दी को नेतृत्व प्रदान किया। देश में तथा विदेशों में हिन्दी की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए खूब परिश्रम उठाया।

गुजरात सरकार की योजना के अनुसार हिन्दी शिक्षक सनद तालीम वर्ग १९५० से १९७३ तक चलाये गये। दो वर्ग थे 'जूनियर हिन्दी शिक्षक सनद' जो प्राथमिक शालाओं के लिए तथा 'सीनियर हिन्दी शिक्षक सनद' हाईस्कूलों के लिए। विद्यापीठ ने हिन्दी

शिक्षकों को तैयार करने में गुजरात सरकार की सहायता की। ये वर्ग भी गुजरात सरकार की नीति के अनुसार १९७३ में बंद हुए।

विद्यापीठ अपनी परीक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकें खुद तैयार करता है। एक जमाना था जब विद्यापीठ की तैयार की गई पुस्तकें आंतरभाषा पाठावली गुजरात की शालाओं में चलती थीं। आज तक कुल मिलाकर ५० से भी अधिक हिन्दी प्रकाशन हुए हैं जिनमें ये प्रमुख हैं – १. हिन्दुस्तानी (गुजराती कोश) दोनों लिपियों में, २. गुजराती हिन्दी कोश, ३. हिन्दी–गुजराती कोश, ४. भूल–सुधार, ५. हिन्दी के विकास में गुजरातियों का हिस्सा, ६. हिन्दी व्याकरण प्रवेश, ७. विद्यापीठ हिन्दी व्याकरण, भाग–१

गुजरात हिन्दी प्रचार समिति की 'संपर्क पत्रिका' नाम से एक पत्रिका प्रकाशित होती है। गुजरात विद्यापीठ की द्वैमासिकी जो विद्यापीठ के नाम से प्रकाशित होती है, जिसमें हिन्दी संशोधन संबंधित लेख प्रकाशित होते हैं।

संस्था का अपना भवन 'हिन्दी भवन' नाम से है। जिलेवार हिन्दी समितियाँ हैं, परीक्षा समिति, पाठ्यपुस्तक समिति, परीक्षक नियुक्ति समिति, परिणाम समिति, प्रश्नपत्र समधोरण आदि उपसमितियाँ द्वारा कामकाज चलता है।

विद्यापीठ का मानना है कि हरेक राज्य अपने ढंग से हिन्दी प्रचार कार्य करे तभी हिन्दी का काम अच्छी तरह से हो सकता है। इस बात को मानकर विद्यापीठ ने अपना कार्यक्षेत्र गुजरात रखा है। हिन्दी प्रचार का कोई केन्द्र गुजरात के बाहर नहीं है। हाँ, गुजराती परीक्षाओं के चार–पॉच केन्द्र अन्य राज्यों में भी हैं।

गुजरात राज्य के सौराष्ट्र विस्तार में 'सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, राजकोट' काम कर रही है। यह समिति गुजरात विद्यापीठ से सहयोग करके हिन्दी प्रचार के विविध क्षेत्रों में सहयोग दे रही है। हिन्दी बालपोथी से हिन्दी तीसरी परीक्षा तक वह स्वतंत्र रूप से

परीक्षाएँ चलाती है। समिति के केन्द्रों में विद्यापीठ अपनी हिन्दी विनीत, हिन्दी सेवक परीक्षाएँ लेता है। विद्यापीठ की अन्य प्रवृत्तियाँ गाँधी विचार प्रचार, हिन्दी वक्तृत्व स्पर्धा, प्रतिभाशोध स्पर्धाएँ, गीता प्रचार आदि प्रवृत्तियों में सहयोग दे रही है।

हिन्दी परीक्षाओं के विद्यार्थीयों की सहायता के लिए व्याख्यानमालाएँ, हिन्दी लेखन प्रचारक वर्ग, हिन्दी शिक्षण वर्ग चलाये जाते हैं। आज तक ऐसे ६२ वर्ग हुए हैं। हिन्दी वक्तृत्व स्पर्धा और हिन्दी निबंध लेखन स्पर्धा की ये दो स्पर्धाएँ महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के साथ सहयोग से हर साल चलाई जाती हैं। इससे दोनों राज्यों के बीच भावनात्मक एकता बढ़ती है।

भारत सरकार की प्रेरणा और सहयोग से विद्यापीठ में १९८४ से हिन्दी टाइपिंग का वर्ग शुरू किया गया है। परीक्षा विद्यापीठ लेता है। तालीमार्थी अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए गुजरात सरकार की तरफ से ली जाती उच्च स्तर की परीक्षा में शामिल होते हैं। वर्ग की उपयोगिता साबित हुई है। भारत सरकार की तरफ से टाईपराइटर तथा फर्नीचर आदि की मदद मिलती रहती है।

गुजरात विद्यापीठ के दो हजार से भी अधिक प्रचार केन्द्र हैं, जहाँ पर परीक्षाएँ ली जाती हैं। प्रत्येक केन्द्र में हिन्दी के प्रचारक निःशुल्क रूप से अपनी सेवाएँ देते है और परीक्षार्थियों को हिन्दी पढ़ाते हैं। हर साल ढाई लाख से अधिक परीक्षार्थी हिन्दी की विविध परीक्षाओं में बैठते हैं।''[3]

शिक्षा संस्थाओं के अतिरिक्त यहाँ की साहित्य एवं संस्कृति के प्रवर्द्धनार्थ जो संस्थाएँ कार्यरत हैं उनमें हिन्दी साहित्य परिषद, साहित्यालोक तथा गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा का उल्लेखनीय स्थान है। साहित्यालोक ने अपने सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मंचीय कार्यक्रमों की एक बार तो धूम-सी मचा दी थी।

साहित्यालोक के संदर्भ में श्री हरिप्रसाद शुक्ल का कथन है कि साहित्यालोक का जन्म १७ दिसम्बर, १९६८ को हुआ, जिसका आलोक केवल इस नगर में या गुजरात में अपितु पूरे पश्चिमांचल में छा गया। शून्यता के बादल धीरे-धीरे छटने लगे और प्रकाश-रश्मि छिटकने लगी। ६ अक्टूबर, १९७० को संस्था ने पंजीकरण प्राप्त किया। इस शुभ संकल्पी संस्था की स्थापना में जिन महानुभावों का सहयोग मिला उनमें श्री रामदास शास्त्री, श्री शिवनंदन मिश्र, श्री रामचेत वर्मा, डॉ. पी.सी. शर्मा, श्री कुलदीप खुराना, श्री दीनबन्धु द्विवेदी, श्री हरिप्रसाद शुक्ल, श्री विजय बहादुर सिंह, श्री जे.आर. पाण्डे, श्री रामकरन यादव, श्री आर.पी. श्रीवास्तव, श्री शरदेन्दु शर्मा, श्री गोविन्द दीक्षित, श्री नेसरीकर आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। संस्था के प्रथम अध्यक्ष श्री गुरूदीप खुराना और मंत्री श्री रामचेत वर्मा नियुक्त हए। संस्था ने अपनी सर्वप्रथम प्रवृत्ति के रूप में साप्ताहिक काव्य गोष्ठियों का शुभारंभ किया, जो निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होने लगी, फिर चल पड़ा साहित्यिक परिचर्चाओं, कवि सम्मेलनों एवं प्रकाशनों का सतत प्रवाह जो आज भी उसी उत्साह, उसी जोश और उमंग के साथ गतिशील है। विद्वान प्राध्यापक डॉ. पी.सी. शर्मा, प्रख्यात साहित्यकार श्री जे.आर. पाण्डे, लोकप्रिय गीतकार श्री रामचेत वर्मा, साहित्य श्रीनिधि श्री नरेन्द्र दवे, जैसे सम्माननीय दिव्य पुरुष इस संस्था के गौरवपूर्ण अध्यक्ष-पद को सुशोभित कर चुके हैं। सम्प्रति हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित गीतकार, सन्निष्ठ साहित्य सेवी श्री हरिप्रसाद शुक्ल संस्था के अध्यक्षीय दायित्व को सँभाल रहे हैं।

अपने संकल्पों, आदर्शों तथा उद्देश्यों को साकार करने के लिए संस्था ने जिन निश्चित प्रवृत्तियों, कार्यक्रमों एवं रचनात्मक लक्ष्यों को हस्तगत कर अग्रसर होती रही वे, निम्नलिखित हैं -

काव्य गोष्ठियों का नियमित संचालन :

सर्जकों को प्रोत्साहन और शक्ति देने के लिए, उनको सर्जनात्मकता की ओर प्रवृत्त करने के लिए काव्य के विविध वर्तमान प्रवाहों से जोडने के लिए तथा उन्हें सतत और उपयोगी लेखन की ओर प्रवृत्त करने के लिए काव्य गोष्ठियॉ आवश्यक हैं। काव्य गोष्ठी रूपी प्रयोगशाला में काव्य परिमार्जन के साथ सर्जकों को ठोस ज्ञान प्राप्त होता है, जो दीर्घ अध्ययन, चिन्तन-मनन से कहीं अधिक परिपक्व होता है। सर्जक की सफलता का सर्टिफिकेट होता है और वह उसे सुपंथ पर ले जाने का मूर्त मार्गदर्शक होता है। सर्जक की स्वर्ण रूपी प्रतिभा में सुगंध भर देता है। अतः संस्था ने अपनी प्रथम प्रवृत्ति के रूप में काव्य गोष्ठी रूपी कार्यशाला का शुभारंभ किया। प्रारंभ में साप्ताहिक पुनः पाक्षिक और आज मासिक काव्य गोष्ठियों का सतत नियमित आयोजन होता आ रहा है। काव्य गोष्ठियाँ सदस्यों के घरों पर सम्पन्न होती हैं, जिससे काव्य साधना के साथ-साथ परस्पर सौहार्द, आत्मीयता, बंधुत्व, अखंडता, भावात्मक एकता आदि के विकास और अभिवृद्धि से जहाँ एक ओर राष्ट्रीय आदर्शों की परिपूर्ति और पालन हैं वहीं दूसरी ओर अनुशासन और सुसंगठन से पोषण पाकर संस्था सुदृढ़ और स्वस्थ बनी हुई है। प्रारंभ में बहुलता हिन्दी भाषी रचनाकारों की थी, परन्तु आज हिन्दीतर भाषी सर्जकों की एक पाँति इससे जुड़ी हुई है।

अहिन्दी भाषी सर्जक बड़े उत्साह और उल्लास से संस्था से जुडते जा रहे हैं तथा ख्याति, पुरस्कार और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं। प्रत्येक कवि गोष्ठी में कोई न कोई नवागन्तुक संस्था में सम्मिलित होने की उत्कण्ठा लेकर आता ही है। अभी तक संस्था ने एक हजार से अधिक काव्य गोष्ठियों का सफल आयोजन किया है और पाँच सौ से अधिक नवोदित, चर्चित, प्रतिष्ठित एवं स्थापित कलम पुत्रों को मंच दिया है।

प्रत्येक कवि गोष्ठी में नई रचना पढ़ने के कठोर नियम ने सर्जकों को नया लिखने को बाध्य किया है और यह बाध्यता ही सिद्धि हो गई है। काव्य गोष्ठियों में चालीस-पचास सर्जकों के समुदाय की जीवंत उपस्थिति एक कवि सम्मेलन का वातावरण उपस्थित करते हुए सर्जकों को काव्य की विविध विधाओं से अवगत कराती है। लोक साहित्य का सरस पठन और गान गोष्ठी का श्रृंगार बन जाता है। संस्था के अधिकांश सदस्यों के काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं, कुछ के प्रकाशनाधीन हैं। बचे हैं सिर्फ नवोदित जो अभी प्रशिक्षणाधीन हैं। इस प्रकार संस्था कवियों को कवि धर्मिता की ओर उन्मुख करने की ओर सतत प्रयत्नशील है।

परिचर्चाओं का आयोजन :

साहित्यिक परिचर्चाएँ सुप्त तथ्यों को उजागर कर जन चेतना और जन रुचि को जाग्रत करती हैं। संस्था द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं। गुजराती के लोक साहित्य के गायक तथा लोक संस्कृति के चितेरे अमर कवि झवेरचन्द मेघाणी तथा हिन्दी के भक्ति युग के महाकवि सूर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि पर परिसंवाद एवं परिचर्चाएँ आयोजित होती रही हैं।

कवि सम्मेलनों का आयोजन :

मनोरंजन के सभी साधनों में कवि सम्मेलन सर्वोत्कृष्ट का साधन है। जिसकी अमिट छाप श्रोता के मन-मस्तिष्क पर से कभी नहीं हटती। इसका सीधा और द्रुत प्रभाव जनता पर पड़ता है। मंच पर प्रस्तुत होनेवाले कवियों की आवाज, अंदाज और प्रस्तुति एक ओर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध बनाती है, तो दूसरी ओर विद्वानों और सर्जकों को लेखन का विशाल आयाम प्रदान करती है। संस्था ने अपना प्रथम अखिल भारतीय कवि सम्मेलन २६ अक्टूबर, १९६८ को दिनेश हॉल, अहमदाबाद में प्रस्तुत किया जिसमें देश

के कई प्रतिष्ठित कवियों ने भाग लिया। इसकी अध्यक्षता वर्तमान गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. अम्बाशंकर नागर ने की थी। इस औद्योगिक-व्यावसायिक नगर ने पहली बार कवि सम्मेलन का आस्वादन किया। प्रयोग सफल रहा। बडी चर्चा रही इसकी पूरे नगर में। इस कवि सम्मेलन में श्रोता के रूप में उपस्थित लोगों में से ही कुछ की ओर से पुनः कवि-सम्मेलन आयोजित करने की माँग और आर्थिक सहायता-प्रदान करने के प्रस्ताव आने लगे। संस्था का उत्साह बढ़ा। तब से लेकर प्रति वर्ष राष्ट्रीय स्तर का कवि-सम्मेलन आयोजित करने की परम्परा १९७४ तक चलती रही। फिर कुछ व्यवधान और अवरोध के कारण यह आयोजन प्रति वर्ष के बजाय दो से लेकर पांच वर्ष के अन्तर पर सम्पन्न होने लगा। इन कवि सम्मेलनों की उपलब्धि यह है कि देश का ऐसा कोई भी सुविख्यात, लब्ध प्रतिष्ठित, लोकप्रिय कवि नहीं है, जो साहित्यालोक मंच पर न आया हो। श्री वीरेन्द्र मिश्र, श्री गोपालदास नीरज, श्री सोमठाकुर, श्री विश्वेश्वर शर्मा, श्री बाल कवि वैरागी, डॉ. पवनकुमार मिश्र, डॉ. हरीश, दूधनाथ शर्मा 'शिरीष' आदि जैसे गीतकारों श्री प्रबुद्ध तिवारी, श्री काका बैसवारी, श्री माणिक वर्मा आदि जैसे व्यंग्यकारों एवं श्री रामलाल नदीम, श्री अंसार कंबरी, श्री कुँअर बेचैन, श्री वाहिद अली वाहिद जैसे ग़जलकारों और छंद पाठियों के मधुर स्वर से गुजरात की भूमि आज भी रसप्लावित है।

इन कवि सम्मेलनों से आशातीत सफलता हिन्दी मंच को मिली। इनसे प्रेरित होकर विभिन्न शिक्षा संस्थानों, ट्रावेल्स कंपनियों, क्लबों तथा अन्य सामाजिक एवं कतिपय व्यावसायिक संस्थानों ने स्थानीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर कवि सम्मेलनों का आयोजन करना प्रारंभ कर दिया है।

पुरस्कार योजना :

संस्था के सदस्यो की काव्य चेतना को प्रोत्साहित करने के लिए डॉ. किशोर काबरा के सौजन्य से कविवर रामचेत वर्मा गौरव पुरस्कार तथा डॉ. नवनीत ठक्कर के सौजन्य से 'प्रो. प्रभास शर्मा स्मृति पुरस्कार' का आयोजन सन् १९९९ से प्रति वर्ष किया जाता है। प्रत्येक पुरस्कार में रु. ५०१/- नकद तथा प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। अभी तक इस योजना के अन्तर्गत विजेता स्पर्धी सर्वश्री विजयकुमार तिवारी, श्री वसन्त ठाकुर, श्री चन्द्रमोहन तिवारी, डॉ. ऋषिपाल धीमान, श्री कैलाशनाथ तिवारी, श्री प्रमोदकुमार कुश, श्री रोहित श्याम चतुर्वेदी, श्री प्रमोद शंकर मिश्र आदि लाभान्वित हो चुके हैं।

ग्रन्थ प्रकाशन तथा लोकार्पण :

ग्रन्थों के प्रकाशन तथा लोकार्पण के दायित्व का निर्वाह संस्था में शालीन तथा गौरवपूर्ण है। ये प्रकाशन व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों स्वरूपों में है। अभी तक सर्जकों की व्यक्तिगत कृतियों का लोकार्पण संस्था द्वारा आयोजित समारोहों में गरिमामय ढंग से किया गया है। श्री कैलाशनाथ तिवारी के काव्य संकलन - १. 'जिन्दगी की राह में', २. 'अँजुरी भर प्यास' तथा डॉ. द्वारका प्रसाद साँचीहर के 'गीत रजनीगंधा के' का लोकार्पण कवियों, विद्वानों और मनीषियों की उपस्थिति में प्रयोग समिति के हॉल में सम्पन्न हुआ था। प्रायः सामूहिक काव्य-कृतियों का लोकार्पण अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में जनमेदिनी के समक्ष सम्पन्न हुआ है।[४]

गुजरात में हिन्दी का जनाग्रही रुझान महात्मा गांधी से ही प्रसरित हुआ है। आज यदि गुजरात के आम आदमी की सामान्य बोली पर या उसके भाषा संस्कारों पर ध्यान दिया जाय तो स्पष्ट आभासित हो जाएगा कि गुजरात को अहिन्दी भाषी मानना ही गलत

है। यहाँ के शत–प्रतिशत सिनेमा गृहों में हिन्दी की फिल्में चल रही है। नई पीढ़ी के बच्चे हिन्दी मे संवाद स्थापित करते हैं, हिन्दी के ही फिल्मी गीतों को गुनगुनाते हैं तथा हिन्दी गीतों की ही प्रतियोगिताएँ आयोजित होती है। हिन्दी की लोकप्रियता का यह हाल है कि पिछले दो दशकों से बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में देश भर से कहीं अधिक परिमाण में छात्र अध्ययन कर रहे हैं। हिन्दी के प्रति जो आत्मीयता और लगाव गुजरात में हैं संभवतः इतना अपनापन अन्य राज्यों में कहीं भी नहीं है।

यही कारण है कि यहाँ हिन्दी के सांस्कृतिक कार्यक्रम सतत संयोजित होते रहते हैं। राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, राष्ट्रीय नाट्य प्रतिस्पर्धाएँ, शास्त्रीय गायन के आयोजन समग्र गुजरात में सतत सम्पन्न होते रहते थे और यही कारण है कि नई पीढ़ी के विद्यार्थी और बुद्धिजीवी हिन्दी साहित्य में रुचि ले रहे हैं। रचनात्मक प्रवृत्तियाँ लगातार बढ़ रही हैं। पत्र और पत्रिकाओं के प्रति भी रुचि परिवर्द्धित हो रही है।

गुजरात की धरती हिन्दी साहित्य सृजन के लिए उर्वरा भूमि रही है। वैसे तो इसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में गण्य माना गया है। किन्तु प्रकृति और प्रवृत्ति से हिन्दी भाषा इसके रग–रग में रची–पची है। हिन्दी साहित्य सृजन का इसका इतिहास भी अत्यंत सम्पन्न रहा है। गुजराती भाषा को यहाँ राजभाषा के रूप में स्वीकारा गया है, किन्तु हिन्दी यहाँ की शिष्टभाषा के रूप में समाहत है। स्वतंत्रता से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व कच्छ भुज राज्य के आश्रम में महाराजा लखपतिसिंह ने व्रजभाषा काव्य पाठशाला की नींव डाली जो स्वतंत्रता प्राप्ति तक यहाँ सतत चलती रही थी और जहाँ के प्रशिक्षित कवियों ने राष्ट्रव्यापी ख्याती अर्जित की थी। राजकीय कोश से ही इस काव्य पाठशाला का संचालन होता रहा था और यहीं से हिन्दी को संस्थाओं के संरक्षण का प्रारंभ माना जा सकता है। आचार्य कुँअर

कुशल ने उपकुलपति के रूप मे इसे मार्गदर्शन दिया और यह कीर्तिमान भी स्थापित किया कि सम्पूर्ण देश में केवल गुजरात के कच्छ भुज राज्य में ही हिन्दी प्रसारण हेतु व्रजभाषा काव्य पाठशाला इतने दीर्घकाल तक चलती रही है।[५]

हिन्दी साहित्य के विकास में सक्रिय भूमिका का निर्वाहन अनेक व्यक्तियों ने तथा अनेक संस्थाओं ने किया है। व्यक्तिगत प्रयास करने वाले अहमदाबाद के लल्लूभाई छगनलाल थे जिन्होंने व्रजभाषा के कीर्तन पदों का सेवा पद्धति के अनुरूप संकलन एवं सम्पादन किया था। गुजरात के कवि डाह्याभाई ने गुजरातियों द्वारा हिन्दी साहित्य में योगदान विषय पर शोधग्रंथ तैयार किया था। कविवर गोविन्द गिल्लाभाई ने गुजरात में रहकर व्रजभाषा काव्य सृजन की परम्परा और विकास पर शोध कार्य किया तथा अनेक अज्ञात तथा अल्पज्ञान व्रजभाषा कवियों के काव्य संकलन भी तैयार किए। उनके द्वारा रचित ग्रंथ गोविन्द सागर इस संदर्भ में महत्वपूर्ण ग्रंथ है। सम्प्रति महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या मंदिर में गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा सम्पादित व्रजभाषा काव्य संकलनों की हस्तप्रतियाँ उपलब्ध है।

उत्तर–मध्यकाल में यहाँ अनेक राज्याश्रयों में कवि एवं साहित्यकार समादरणीय रूप से नियुक्त थे। आधुनिक काल में अनेक संस्थाओं के संचालक तथा व्यक्तिगत रूप से हिन्दी भाषा एवं साहित्य को संवर्द्धित करने वाले अनेक महापुरुष हुए हैं। आधुनिक काल के हिन्दी संरक्षकों के कुछ महत्वपूर्ण कवियों के प्रयासों से हिन्दी सतत समृद्ध और अग्रसर होती रही है।

वर्तमान काल में हिन्दी साहित्य की ध्वजा को खुले आकाश में फहराने वाले हस्ताक्षरों में कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, डॉ. रमणलाल पाठक, डॉ. किशोर काबरा, डॉ. विष्णु विराट, डॉ. रामकुमार गुप्त, आ. रघुनाथ भट्ट, कालिदास त्रिवेदी, श्री अरविन्द जोशी,

नानूभाई बारोट, रजनीकांत जोशी, श्री के.का. शास्त्री, प्रभृति विद्वान साहित्यकारों का गौरव के साथ उल्लेख किया जा सकता है।

गुजरात में अनेक संस्थाएँ ऐसी हैं, जो राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार एवं प्रचार से ही संलग्न है। इनमें विशेष रूप से गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, साहित्यलोक, गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा गुजरात साहित्य संगम, गांधी स्मृति ट्रस्ट, हिन्दी साहित्य परिषद, आदि की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय है।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रसार एवं प्रचार में हिन्दी संस्थाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्र के अनेक शिखरस्थ नेताओं ने इस संदर्भ में व्यक्ति स्तर पर तथा समष्टिगत स्तर पर प्रयास किए थे, कुछ राजनेताओं ने हिन्दी संस्थाओं की इस महत्ता को स्वीकारते हुए इन्हें संरक्षण और प्रश्रय भी दिया था।

देश की प्रमुख प्रान्तीय हिन्दी प्रचार संस्थाओं में कुछ संस्थाओं के उल्लेखनीय प्रदान रहे हैं। जो निम्नलिखित हैं : असम राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद, मणिपुर हिन्दी परिषद, मिजोरम हिन्दी प्रचार समिति, पश्चिमी वंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, उड़ीसा राष्ट्रभाषा परिषद, हिन्दी विद्यापीठ, देवघर, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, विदर्भ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मराठवाड़ा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बेलगाँव जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गोवा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, हिन्दी प्रचार सभा, केरल हिन्दी प्रचार सभा, दक्षिणभारत हिन्दी प्रचार सभा, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जम्मू कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दिल्ली प्रान्तीय राष्ट्रभाषा समिति, प्रयाग महिला विद्यापीठ, हिन्दी प्रचार प्रसार संस्थान–

जयपुर, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति–वर्धा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन–प्रयाग, साहित्य मंडल–नाथद्वारा, व्रज साहित्य मंडल–मथुरा, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नागरी प्रचारिणी समभा, नागरी लिपी परिषद–दिल्ली, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान–आगरा, उत्तर प्रेदश हिन्दी संस्थान–लखनऊ आदि अनेक उल्लेखनीय संस्थाएँ हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा एवं साहित्य के उन्नमन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। गुजरात में हिन्दी से सम्बद्ध अनेक संस्थाएँ हैं जिनके द्वारा साहित्य सृजन की प्रक्रिया अनुप्रेरित हुई है तथा अनेक साहित्य ग्रंथों का प्रकाशन भी हुआ है। इन प्रमुख कुछ संस्थाओं के साहित्य–प्रदान पर प्रकाश डाला जा रहा है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा :

वैसे तो राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का कार्यक्षेत्र विश्वव्यापी रहा है किंतु महाराष्ट्र और गुजरात में इस समिति का विशेष योगदान माना जाता है।

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद :

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य को शिक्षण और पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से व्यक्त करने में विद्यापीठ की अहम भूमिका रही है। गुजरात विद्यापीठ में हिन्दी को एक भाषा के रूप में ही नहीं रखा गया बल्कि हिन्दी को भारतीय अस्मिता से सम्बद्ध मानकर एक सांस्कृतिक पहचान का गौरव प्रदान किया है। सम्प्रति गुजरात विद्यापीठ में हिन्दी विभाग की अध्यक्षा प्रो. मालती दुबे हैं जिनके कुशल नेतृत्व में साहित्य सृजन की गौरवमयी परम्परा अग्रसर हो रही है।

सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति :

हिन्दी शिक्षण और हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार से सम्बद्ध यह संस्था सौराष्ट्र प्रांत में हिन्दी की मशाल जलाए हुए है। अतिरिक्त काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार सभा/हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, गुजरात/भावनगर राष्ट्रभाषा प्रचार सभा का कार्य प्रशंसनीय और महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दी साहित्य सृजन को प्रोत्साहित करने वाली संस्थाओं में हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी साहित्य परिषद के द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के अब तक ५१ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं तथा 'भाषा सेतु' साहित्य पत्रिका का सतत प्रकाशन हो रहा है।

गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा :

बड़ौदा में हिन्दी साहित्यकारों को एक मंच पर एकत्र करने के लिए तथा हिन्दी के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के लिए इस संस्था की स्थापना सन् १९७८ में हुई थी। इसके संस्थापक सदस्यों में डॉ. नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन', डॉ. विष्णु विराट, डॉ. के.एम. शाह, डॉ. श्रीकांत चतुर्वेदी, डॉ. अक्षय कुमार गोस्वामी, डॉ. वागीश कुमार गोस्वामी, श्री मुकुन्दलाल मुंशी, डॉ. शान्ता श्रीवास्तव जैसे वरिष्ठ साहित्यकार और अध्यापकगण सम्मिलित हुए, जिन्होंने बहुत शीघ्र ही गुजरात भर में इस संस्था को प्रसिद्धि के चरम उत्कर्ष पर स्थापित कर दिया।[६]

इस संस्था के मंच से अनेक राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन, कवि गोष्ठी, राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, व्याख्यान आदि आयोजित होते रहे हैं। लगभग २० ग्रंथ इस संस्था के सद्प्रयासों से प्रकाशित हो चुके हैं तथा 'भव्य-भारती' साहित्य पत्रिका का सतत प्रकाशन भी होता रहा है। साहित्यकारों के सम्मानार्थ एक लाख रुपये का शिखर सम्मान प्रदान किया जाता रहा है। जिससे प्रो. व्रजवल्लभ मिश्र, डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी, श्री मुकुन्दलाल मुंशी, डॉ.

भगवानदास कहार, प्रो. शितांसु यशश्चन्द्र प्रभृति विद्वान इस संस्था से समादृत हो चुके हैं। श्री युगल किशोर चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रंथ एवं विराट अभिनन्दन ग्रंथ जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथो का भी इसी संस्था द्वारा प्रकाशन हुअ है। सम्प्रति हिन्दी साहित्य के संवर्द्धन मे गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा का उल्लेखनीय योगदान है।

हिन्दी साहित्य अकादमी :

समग्र गुजरात के रचनाकारों एवं साहित्य समीक्षकों को एक मंच पर लाने का प्रयास इसी अकादमी ने किया है। डॉ. विष्णु विराट, प्रो. अम्बाशंकर नागर, प्रो. रामकुमार गुप्ता, डॉ. किशोर काबरा, प्रो. कुंजबिहारी वार्ष्णेय, आ. रघुनाथ भट्ट आदि अनेक विद्वानों के प्रयासों से यह अकादमी अपनी गौरव गाथा अंकित कर पाई है। अब तक इस अकादमी से शताधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ तथा विद्वानों के सम्मान आदि यह अकादमी उल्लेखनीय रही है।

किन्हीं विशिष्ट राजनीतिक कारणों से अब यह अकादमी सन् २००६ से सुसुप्तावस्था में निद्राधीन है। भविष्य में यह कब जाग पाएगी, इसकी आशा निरर्थक है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुजरात में हिन्दी साहित्य के उन्नयन और विकास में गुजरात की अनेक साहित्य संस्थाओं, हिन्दी प्रचार सभाओं, विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों एवं अकादमी की अहम् भूमिका रही है। भविष्य में यह महत्वपूर्ण अभियान आगे बढ़ता रहेगा, ऐसी आशा है।

संदर्भ

१. गुजरात की समकालीन हिन्दी साहित्य – आ. रघुनाथ भट्ट–अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. ३९३

२. श्री जेठालाल जोशी–अभिनन्दन ग्रंथ, अहमदाबाद, पृ. १९६

३. गुजरात का समकालीन हिन्दी साहित्य – पृ.४२१

४. वही, पृ.४२२

५. भव्यभारती सम्पादक डॉ. विष्णु विराट, अंक–४, पृ. १६

६. भाषा सेतु हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद–सं. किशोर काबरा, अंक–११, पृ. १६